EXIT

दैनिक जागरण

जागरण

दैनिक जागरण
'कलम आज उनकी जय बोल'
RCU
BIOME

दैनिक जागरण की ओर से राजधानी के होटल रेडिसन ब्लू में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती पर आयोजित शिक्षा समागम सह सम्मान समारोह के प्रायोजकों के साथ कार्यक्रम के मुख्य वक्ता इस्कान रांची के महाप्रबंधक मधुसूदन मुकुंद दास

## सनातन शिक्षा में मूल्य व नीति पर रहा जोर

आयोजन के पहले सत्र में आधुनिक शिक्षा प्रणाली और सनातन संस्कार विषय पर अपनी बात रखते वक्ता

**जागरण संवाददाता, रांची :** कार्यक्रम के पहले सत्र में आधुनिक शिक्षा प्रणाली और सनातन संस्कार विषय पर विद्वानों ने अपने विचार रखे। रांची विवि के कुलपति डा अजीत कुमार सिन्हा ने कहा कि समय के बदलाव के साथ हमारी शिक्षा प्रणाली भी बदलती है, लेकिन कुछ चीजें शाश्वत होती हैं। ये शाश्वत मूल्य होते हैं। हर युग में सत्य बोलना चाहिए। झूठ कोई पसंद नहीं करता। सनातन संस्कार मूल्य पर जोर देता है। नैतिकता की बात करता है। यहां शिक्षा का आधार यही है। भारतीय परंपरा में इसी बात पर जोर है। लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी नैतिकता नहीं होगी, मूल्य नहीं होंगे, वह शिक्षा किस काम की। उन्होंने नई शिक्षा नीति के संदर्भ में भी कहा कि इसमें सनातन का समावेश किया गया है। उन्होंने बताया कि नई शिक्षा नीति से 155 कोर्स का चुनाव किए हैं। रांची विवि को आईआईटी धनबाद, चेन्नई आदि संस्थान मदद करने को उत्सुक हैं। हमने कौशल विकास पर जोर दिया है। साईंनाथ विवि के कुलपति डा एसपी अग्रवाल ने कहा कि संस्कृत में एक नीति वाक्य है, विद्या से विनय की प्राप्ति होती है। हमारे यहां धर्म पर जोर है। धर्म यहां कई अर्थ रखता है। गुरु शिष्य की परंपरा यहां रही है। आरसीयू विश्रामपुर, पलामू के कुलपति डा कल्याण कुमार ने इस बात पर जोर दिया कि टीचर वह है जो कठिन विषय को आसान बना दे। सनातन संस्कृति में तीन बात पर जोर है-आचार, विचार और व्यवहार। उन्होंने आज आज मेन रोड से होटल तक आने में पचास मिनट का समय लगा। हम आगे जा रहे हैं या पीछे जा रहे हैं। समय की पाबंदी नहीं है। बाबू दिनेश सिंह विवि गढ़वा के रजिस्ट्रार प्रो अजय भूषण प्रसाद ने कहा कि आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण है। वहीं, डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के कुलपति डा तपन कुमार शांडिल्य ने कहा कि आजादी से पहले और आजादी के बाद की शिक्षा में बदलाव है। पहले की शिक्षा के कारण हम विश्व गुरु बने थे। आज नई शिक्षा के माध्यम से यही प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पहले की शिक्षा में नीति पर जोर था। मूल्यों पर जोर था। यही उसका उद्देश्य था। लेकिन आज की शिक्षा में वह तत्व गायब है। अब नई शिक्षा नीति में इस पर जोर दिया गया है। इसके बिना हम विकास नहीं कर सकते। आज शिक्षा का मतलब रोजगार और ज्ञान प्राप्त करना है।

**पहला सत्र**

## 'ज्ञान के साथ व्यावहारिकता भी जरूरी'

दूसरे सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभाव विषय पर चर्चा के बाद स्मृति चिह्न के साथ पैनलिस्ट

**जागरण संवाददाता, रांची :** दूसरे सत्र में वक्ताओं ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रभाव विषय पर अपने विचार प्रकट किए। डीएवी आलोक के प्राचार्य डा. अशोक कुमार ने कहा कि पूर्व में सिर्फ ज्ञान की बातें होती थी लेकिन अब नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने व्यावहारिकता को अपनाए जाने पर बल दिया है। जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होगा। 34 वर्षों बाद शिक्षा नीति में बदलाव किया गया है। जिसमें हर पहलु को समाहित किया गया है। पिछले तीन दशकों में जो भी शिक्षा नीति बनी उसमें पारंपरिक ज्ञान को उस तरह समाहित नहीं किया गया जो कि वर्तमान में बनी शिक्षा नीति में समाहित है। बुनियादी स्तर से ही सिलेबस को तैयार किया गया है। डीपीएस रांची के प्राचार्य डा. आरके झा ने एनईपी 2020 की अवधारणा पर चर्चा करते कहा कि शिक्षा जीविकोपार्जन का माध्यम मात्र नहीं है बल्कि दूसरों को जीने का साधन उपलब्ध हो, इस ओर भी लोगों को प्रवृत करता है। हमें समभाव उद्देश्य को आत्मसात करते हुए शिक्षित बनने का प्रयास करना चाहिए। इस व्यवस्था में बच्चों को हरेक पहलुओं की जानकारी उपलब्ध हो पाएगी। उन्हें इसका भान हो सकेगा कि सामाजिक परिवेश में कैसी शिक्षण व्यवस्था आवश्यक है। वहीं आरके ग्रुप आफ इंस्टीट्यूशंस गढ़वा के प्रशासक प्रमोद कुमार झा ने कहा कि एनईपी 2020 के लागू होने से बच्चों पर न सिर्फ पुस्तक का बोझ कम हुआ है बल्कि परीक्षा का लोड भी कम हुआ है। अब बच्चे अंकों के बजाए प्रदर्शन पर फोकस हो रहे हैं, जिसका असर उनकी पढ़ाई पर भी देखने को मिल रही है। पांचवीं कक्षा तक के बच्चों के बीच तो अब अंकों की नहीं बल्कि उन्हें स्थानीय भाषाओं में ही शिक्षा दिए जाने का प्रयास किया गया है। ताकि बच्चे कम समय में खेलते खेलते अपने सिलेबस को पूरा कर सके। आक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल रांची के प्राचार्य रंजीत कुमार ठाकुर कहते हैं जिस तरह समंदर को लोटे में भरना मुश्किल है, उसी प्रकार शिक्षा को सीमित करना संभव ही नहीं है। मैकाले शिक्षण व्यवस्था में लोग मशीन बन चुके थे और यही कारण है कि इसमें परिवर्तन कर पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था को जगह दी गई है। नई शिक्षा नीति 2020 पूरी तरह से व्यावहारिक और प्रयोग आधारित है। इसमें स्थानीयता को बढ़ावा दिया जा रहा है या यूं कहें कि भारतीयता को बढ़ावा मिल रहा है।

**दूसरा सत्र**

## 'तकनीक के साथ हो परंपरा का ज्ञान'



तीसरे सत्र आधुनिक तकनीक का पारंपरिक शिक्षण प्रणाली पर प्रभाव पर चर्चा की गई। सम्मानित पैनलिस्ट

**जागरण संवाददाता, रांची :** तीसरे सत्र आधुनिक तकनीक का पारंपरिक शिक्षण प्रणाली पर प्रभाव पर कई वक्ताओं ने दोनों के बीच द्वंद को रेखांकित किया। डीएवी पब्लिक स्कूल, हेहल के प्रधानाचार्य संजय कुमार मिश्रा ने कहा आज आधुनिक तकनीक से शिक्षा भी आसान हुई है। समय के साथ बदलाव आता है। आज शिक्षा में भी काफी बदलाव आया है। पारंपरिक शिक्षण प्रणाली और तकनीक दोनों का आज समावेश है। आज तकनीक ने बहुत कुछ बदल दिया है। कोरोना काल में भी हमने देखा कि किस तरह तकनीक ने साथ दिया। हमें दोनों के साथ समन्वय बनाकर काम करना चाहिए। आज तरह-तरह के लर्निंग की बात हो रही हे। रोबोटिक्स एजुकेशन की बात हो रही है। एआई की बात हो रही है। यह बदलाव सुखद है। आईएचएम के प्राचार्य डा भूपेश कुमार ने तकनीक नहीं होती तो दो साल के कोविड में शिक्षा बैठ जाती। तकनीक ने बहुत साथ दिया। बच्चों का दो साल बर्बाद नहीं हुआ। पूरा देश तकनीक की बदौलत ही जीवित रहा। यह न होता तो देश का क्या हाल होता, आप इसकी कल्पना कर सकते हैं। इसलिए, हमें तकनीक का भी स्वागत करना चाहिए। इसके साथ हमें पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के जो गुण हैं, जो विशेषता है, उसे आत्मसात करना चाहिए। तकनीक का दुष्प्रभाव भी है, लेकिन हमें इसके लिए बीच का रास्ता निकालना चाहिए। हर चीज के दो पहलू होते हैं। हमें सकारात्मक होकर सोचना चाहिए। एसआरडीएवी पब्लिक स्कूल के प्राचार्य संजीत कुमार मिश्र ने कहा कि पहले गुरुकुल की परंपरा रही है। गुरु और शिष्य की परंपरा रही है। यही प्राचीन पद्धति थी। भारत में शिक्षा प्राचीन काल से है। हमें आज के समय में तकनीक का साथ भी लेना चाहिए, लेकिन वह ऐसा हो कि इससे हम आगे बढ़ सकें। भारत की शिक्षा प्रणाली का अपना महत्व है। डीएवी पब्लिक स्कूल, बरियातू के प्राचार्य डा तापस घोष ने कहा कि तकनीक आज के समय की जरूरत है। इससे हम बच नहीं सकते। आज कौशल का युग है। हमारे अंदर कौशल नहीं रहेगा तो कोई पूछेगा नहीं। तकनीक हमारी शिक्षा प्रणाली का पूरक है, विरोधी नहीं। इस बात का हमें ध्यान रखना चाहिए। आज स्कील की बात हो रही है। शिक्षा के लिए यह जरूरी है। हमारी ज्ञान परंपरा के लिए भी यह जरूरी है तो दोनों का तालमेल हो। दोनों साथ-साथ चलें।

**तीसरा सत्र**

## 'अंकों पर नहीं, बच्चों के प्रायोगिक अनुभव पर देना होगा बल'



चौथे सत्र में परीक्षा प्रणाली पर अपने विचार व्यक्त करते वक्ता

**जागरण संवाददाता, रांची :** चौथे सत्र में वक्ताओं ने वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अंकार्जन की दौड़ से प्रभावित होती उत्कृष्टता...विषय पर विचार प्रकट किए। सेवन स्टार्स एकेडमी हेहल के निदेशक डा. बिंदेश्वर बेक ने कहा तकनीकी दौर में बच्चे अधिक सतर्क हो चुके हैं। तकनीक कितना महत्वपूर्ण है इसका नजारा कोविड काल में देखने को मिला था। जहां तक अंकों की बात है तो बच्चों से अधिक अभिभावक चिंतित रहते हैं, इससे बच्चों पर बेवजह प्रेशर बना रहता है। आदर्श विद्या मंदिर पब्लिक स्कूल कोकर के प्राचार्य मनोज कुमार ने कहा कि थ्योरी से अधिक प्रैक्टिकल पढ़ाई पर फोकस करना होगा। बच्चों के अंकों पर ध्यान न देकर उन्हें प्रैक्टिकल अनुभव देने पर बल देना होगा। इस पद्धति से बच्चों का न सिर्फ सर्वांगीण विकास होता है बल्कि उन्हें शुरुआती दिनों से ही अपने शब्दों में विषयवस्तु को परखने और लिखने का अभ्यास होने लगता है। साथ ही स्वभाविक रूप से उनके अंकों में गुणात्मक सुधार होने लगता है। केंद्रीय विद्यालय दीपाटोली के प्राचार्य दीपांकर सेनापति ने कहा कि बच्चों से अधिक अभिभावकों के बीच अंकों की होड़ लगी रहती है। जो कि पूरी तरह से अनुचित है। परफार्मेंस इंडेक्स पर सबकी नजर रहती है जबकि एनईपी में व्यावहारिक और प्रयोगात्मक पढ़ाई पर बल दिया गया है। प्रयोगात्मक शिक्षण व्यवस्था से बच्चों में नई नई चीजों को सीखने की ललक पैदा होती है और उनमें आत्मविश्वास की भी बढ़ोत्तरी होती है। गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय कल्याणपुर गढ़वा की प्राचार्या डा. संयुक्ता कुमारी सिंह ने कहा कि अंकों के रेस में बेवजह बच्चों पर अभिभावक दबाव बनाते हैं। जो कि उनके प्रदर्शन पर असर डालता है। ज्ञान से अधिक एकेडमिक एक्सीलेंस बनाए रखने का प्रेशर रहता है, इसके साइड इफेक्ट भी होते हैं। कभी कभार तो अच्छे बच्चे भी इसके शिकार हो जाते हैं और उनका करियर बर्बाद हो जाता है। वहीं सरला बिरला स्कूल रांची के एकेडमिक इंचार्ज गौतम कुमार ने कहा कि सामाजिक बदलाव ने पठन पाठन को भी प्रभावित किया है। अंकों के आधार पर बच्चों की प्रतिभा और प्रदर्शन को आंकना मुश्किल होता है। क्योंकि कभी कभार बैक बेंचर्स या फिर कम अंक लाने वाले बच्चे आगामी दिनों बेहतर करते हैं।

**चौथा सत्र**

## 'आजकल बच्चों पर दबाव डालती हैं अभिभावकों की अपेक्षाएं'



पांचवें सत्र में चर्चा के बाद सम्मानित फादर एन लकड़ा व अन्य अतिथि

**जागरण संवाददाता, रांची:** अंतिम व पांचवें सत्र में विशेषज्ञों ने ''परिवार और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधुनिक जीवन शैली का प्रभाव'' विषय पर अपने विचार रखे। इस सत्र में विशेष रूप से बच्चों पर आधुनिक जीवन शैली और शिक्षा पर इसके प्रभावों पर चर्चा की गई। डीएवी कपिलदेव के प्राचार्य एमके सिन्हा ने अपने विचार रखते हुए रामधारी सिंह दिनकर को नमन किया और महात्मा गांधी की 'यंग इंडिया' का हवाला दिया। उन्होंने बताया कि आज से 104 साल पहले, 1920 में गांधी ने शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया था। जब देश आजाद होगा, तो इसके साथ विकृतियां भी आएंगी। लोग चरित्र की पूजा कम करेंगे और पैसे की पूजा अधिक करेंगे। भ्रष्टाचार का बोलबाला होगा। वह आज दिख रहा है। वहीं, संत जेवियर्स कालेज के प्राचार्य फादर एन. लकड़ा जेएस ने शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक जीवन शैली और एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) के बढ़ते प्रभाव को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि आज के बच्चे तकनीकी रूप से बहुत तेज हैं, डिजिटल इंडिया के कारण सूचना तक पहुंच आसान हो गई है। उन्होंने कहा कि सनातन संस्कार से ही देश आगे बढ़ सकता है। संत माइकल्स पब्लिक स्कूल के निदेशक सह प्राचार्य दीपक कुमार सिन्हा ने बच्चों और शिक्षकों के सामने मौजूद चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आजकल अभिभावकों की अपेक्षाएं बच्चों पर अधिक दबाव डालती हैं। वे चाहते हैं कि बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ें और उच्च अंक प्राप्त करें। वहीं, शिक्षकों के लिए बच्चों के सार्वांगीण विकास की चुनौती रहती है। डीएवी नंदराज के प्रधानाचार्य रवि प्रकाश तिवारी ने एआई और मशीन लर्निंग के बारे में बात करते हुए कहा कि ये तकनीकें शिक्षकों की भूमिका को समाप्त नहीं कर सकतीं। शिक्षक का असली काम बच्चों में भावना और नैतिकता को जागृत करना है, और एआई सिर्फ एक टूल है जो इस प्रक्रिया को सुगम बनाता है। शिक्षक बच्चों में संवेदनशीलता जगाता है। इसलिए, शिक्षकों की भूमिका तकनीक के आने से समाप्त नहीं होगी। विकास पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य अंशु तिवारी ने कहा कि आज का परिदृश्य बदल गया है। पहले बच्चे शिक्षकों से बात करने में डरते थे, लेकिन आज ऐसा नहीं है।

**पांचवां सत्र**

शिक्षा में वो ताकत है जिससे हम दुनिया को बदलने की क्षमता रखते है। इसलिए जीवन में शिक्षा बहुत जरूरी है। शिक्षा ग्रहण करें।
- राकेश कुमार



नई शिक्षा नीति लाना जरूरी है, इससे कई बदलाव देखने को मिलेंगे। आने वाले समय में एक बार फिर शिक्षा के युग में बदलाव होगा जो सार्थक साबित हो सकता है। - डा. संयुक्ता कुमारी सिंह



आधुनिक शिक्षा से पढ़कर निकलने के बाद एक नौकरी के लिए हमें दर-दर भटकना पड़ता है तो कहीं न कहीं मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में बड़ी खामियां है। - डा. अर्चना कुमारी



किसी भी क्षेत्र में शिक्षा के बिना आगे बढ़ना मुश्किल है। साक्षरता दर बढ़ाने के लिए कई प्रयास किए जा रहे है, जरूरत है कि हम सभी को भी मिलकर काम करना होगा। ग्रामीण स्तर से लेकर शहरी क्षेत्र में बसे निचले स्तर तक के लोगों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध करानी होगी।
- आफताब आलम



शिक्षा समाज की सभ्यता, संस्कृति और धरोहर को भी संजोने का महान कार्य कर रहा है। दैनिक जागरण परिवार का बहुत आभार। इस तरह के आयोजनों से शिक्षाविदो और विद्वानों को बल मिलता है और वे भविष्य में अधिक उत्साह के साथ विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा की अलख जगाने में लग जाते है।
- पंकज सिंह



मुख्य प्रायोजक :
RCU
कार्यक्रम के मुख्य प्रायोजक रामचंद्र यूनिवर्सिटी पलामू एवं सहप्रायोजक बायोम इंस्टीट्यूट, एनआइबीएम, साईं नाथ यूनिवर्सिटी, बाबू दिनेश सिंह यूनिवर्सिटी, कामर्स कोचिंग, क्लासेस, संत जेवियर्स कालेज, छोटानागपुर कालेज, कैंब्रिज ट्रस्ट आफ इंडिया, आरके पब्लिक स्कूल, गोपीनाथ सिंह जन सेवा ट्रस्ट, ब्राइट एंगल्स, कोशिश ट्रस्ट, थिंक नेक्स्ट सोल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड, डा पार्थ, डा सुनील, डा प्रभात कुमार, एनएच प्रगति एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसायटी, आइएचएम रांची एवं हास्पिटलिटी पार्टनर रेडिशन ब्लू थे।
प्रायोजक :
BIOME
Leading Institute for Pre-Medical Exam.
A Unit of Bhavya Educational Services LLP
प्रायोजक :
A PIONEER GROUP OF EDUCATION SAI NATH UNIVERSITY
NIBM
St. Xavier's College, Dr. Camil Bulcke Path, Ranchi
Chotanagpur Law College, Kali Nagar, Namkum, Ranchi
CAMBRIDGE TRUST OF INDIA, TATISILWAI, RANCHI
डा. पार्थ कुमार चौधरी
डा. सुनील कुमार
डा. प्रभात कुमार
गोपीनाथ सिंह जन सेवा ट्रस्ट
COMMERCE COACHING CLASSES, 11th, 12th B.COM, BBA, 7004285731
KOSHISH TRUST RANCHI
Think Next Solutions Pvt.Ltd
BRIGHT ANGELS PLAY SCHOOL, Harihar Toli, Lower Chutia, Ranchi. Ph.: 7781002847
IHM RANCHI

********

दैनिक जागरण

# शिक्षा समागम-सह-सम्मान समारोह 2024



रेडिशन ब्लू में सोमवार को दैनिक जागरण की ओर से राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती पर आयोजित सम्मान समारोह में शामिल अतिथि व अन्य लोग ● जागरण

## राष्ट्रबोध की वाहक है भारतीय ज्ञान परंपरा

### दिनकर जयंती पर 'कलम आज उनकी जय बोल' शिक्षा समागम सह सम्मान समारोह आयोजित

**जागरण संवाददाता, रांची:** शिक्षा जीवन का मूल आधार है। भारतीय परंपरा में शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। दुनिया में अंधकार ही अंधकार था, भारत में ज्ञान की समृद्ध परंपरा रही। तक्षशिला, विक्रमशिला से लेकर नालंदा विवि अपनी अनूठी ज्ञान परंपरा को लेकर विश्व प्रसिद्ध थे, जहां दुनिया भर के छात्र पढ़ने आते थे। इस कारण भारत विश्वगुरु था। एक बार फिर इसे पुनःप्रतिष्ठित करने का जतन किया जा रहा है। रेडिशन ब्लू में सोमवार की संध्या दैनिक जागरण की ओर से आयोजित राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती पर 'कलम आज उनकी जय बोल' के तहत शिक्षा समागम सह सम्मान समारोह में विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, प्राचार्यों और शिक्षाविदों ने इसी के इर्द-गिर्द अपनी बात रखी। कार्यक्रम पांच सत्रों में चला। आधुनिक शिक्षा प्रणाली और सनातन संस्कार, नई शिक्षा नीति का प्रभाव, आधुनिक तकनीक का पारंपरिक शिक्षण प्रणाली पर प्रभाव, वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अंकार्जन की दौड़ से प्रभावित होती उत्कृष्टता और पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधुनिक जीवन शैली का प्रभाव।

**शिक्षा ही संस्कार व चरित्र निर्माण का मूल:** पांच सत्रों का निचोड़ यही था कि शिक्षा संस्कार का मूल है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल रोजगार की बात नहीं करती है। वह मूल्यों की बात करती है। एक नीति की बात करती है। विद्वान वक्ताओं ने बताया कि हमारे यहां शिक्षा का मूल स्वभाव चरित्र का निर्माण रहा है। चरित्र नहीं है, आपके पास मूल्य नहीं है, एक सकारात्मक बोध नहीं है तो शिक्षा का कोई मोल नहीं है। आज की आपाधापी भरी जिंदगी, प्रतियोगिता-प्रतिस्पर्धा और अंकों को सर्वेसर्वा मानने वाली शिक्षा प्रणाली से हम एक बेहतर नागरिक नहीं बना सकते हैं। वक्ताओं ने यह भी कहा कि तकनीक समय के साथ जरूरी है, लेकिन केवल तकनीक से ही जिंदगी नहीं चल सकती। शिक्षक छात्रों को संवेदनशील बनाते हैं। उनके अंदर मूल्यबोध पैदा करते हैं। दायित्व और कर्तव्यबोध की बात करते हैं। रांची विवि के कुलपति डा अजीत कुमार सिन्हा ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा हमारे अंदर राष्ट्रबोध पैदा करती है। नई शिक्षा नीति नौकरी करने नहीं, देने की बात करती है। डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के कुलपति डा तपन कुमार शांडिल्य ने आजादी से पहले और आजादी के बाद शिक्षा पर प्रकाश डाला। उन्होंने दिनकर को भी याद किया। आरसीयू, विश्रामपुर, पलामू के कुलपति डा कल्याण कुमार ने कहा कि टीचर वह है जो कठिन विषय को आसान कर दे।

साईं नाथ विवि के कुलपति डा एसपी अग्रवाल का भी जोर इस बात पर था कि विद्या विनम्र बनाती है। यही ज्ञान की कसौटी है। इस मौके पर आशीर्वचन के लिए रांची इस्कान के महाप्रबंधक मधुसूदन मुकुंद दास ने भी गीता को आधार मानकर अपनी बात रखी। इसके पूर्व कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों द्वारा दिनकर, मां सरस्वती आदि के चित्रों पर पुष्पांजलि और दीप प्रज्वलित कर किया गया। स्वागत भाषण दैनिक जागरण रांची के जीएम परितोष झा ने दिया। कार्यक्रम में संपादकीय प्रभारी शशि शेखर, एजीएम मार्केटिंग झारखंड धर्मेंद्र कुमार, सिटी हेड मार्केटिंग रांची अजय पांडेय सहित जागरण परिवार के लोग मौजूद थे। पूरे सत्र का संचालन दिव्यांशु ने किया। इस अवसर पर नृत्य ताल डांस एकेडमी के कलाकारों ने सरस्वती वंदना पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। डायरेक्टर और कोरियोग्राफर इंद्रजीत सिंह के निर्देशन में रेखा महतो, वेदांसी शर्मा, गर्विता कश्यप और आरव इभान सिंह आदि ने नृत्य गान पेश किया। कार्यक्रम में केरियोग्राफर नमिता सिंह भी उपस्थित थीं। कार्यक्रम में शहर ही नहीं, गढ़वा, पलामू आदि जिलों से भी शिक्षाविद् आए थे।



उद्घाटन मौके पर अतिथियों के साथ दैनिक जागरण रांची के महाप्रबंधक परितोष झा, एजीएम मार्केटिंग झारखंड धर्मेंद्र कुमार व अन्य।





शिक्षा समागम सह सम्मान समारोह में नृत्य प्रस्तुत करती कलाकार ● जागरण

### बिना धर्म मनुष्य पशु के समान है : मधुसूदन मुकुंद दास



**जासं, रांची :** इस्कान रांची के महाप्रबंधक मधुसूदन मुकुंद दास भारतीय ज्ञान की बात की। उन्होंने बताया, जीवन का उद्देश्य क्या है? मनुष्य और जानवर में क्या अंतर है? उन्होंने कहा, आहार, निद्रा, भय, मैथुन-ये तो इंसान और पशु दोनों में समान है। धर्म ही है, जो जानवर और मनुष्य को अलग करता है। उन्होंने कहा, सेवा करना हमारा गुण है। यह काम जानवर नहीं कर सकता। मनुष्य ही ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है। कहा गया है, अथातो ब्रह्म जिज्ञासा। भारतीय ज्ञान परंपरा मूल्यपरक रही है। वह मूल्यों की बात करती है। वह नैतिकता की बात करती है। आखिर, यह कौन सी शिक्षा है, जिसके कारण युवा आत्महत्या कर लेते हैं। कोटा से आए दिन ऐसी खबरें आती है। क्या हमारी शिक्षा प्रणाली में दोष है? उन्होंने कहा, शिक्षा में मूल्य नहीं है, वह हमें विनम्र नहीं बनाती है, उसका जीवन में कोई मोल नहीं है। ज्ञान हमें मुक्त करता है। गीता में कृष्ण ने ज्ञान की बात की है। वे धर्म की बात करते हैं। कोरोना काल हमें बहुत कुछ सीख दे गया। उन्होंने अंत में दिनकर की पंक्तियों से समापन किया, दुर्योधन वह भी दे न सका, आशीष समाज की ले न सका, उल्टे, हरि को बांधने चला, जो था असाध्य, साधने चला। जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।

## किसने क्या कहा



शिक्षक किसी भी क्षेत्र में हों वो हमेशा समाज को गढ़ने का काम करते हैं। जब हम समाज को कुछ देते हैं, तो समाज भी हमें उसका रिटर्न देता है। जागरण के इस सम्मान के लिए हमेशा शुक्रगुजार रहूंगा। **-डा. प्रभात कुमार**



इस तरह के कार्यक्रम से युवाओं में भी साहित्य के क्षेत्र में बढ़ा करने की ऊर्जा का संचार होता है। मेडिकल लाइन में हमेशा मेरा यही प्रयास होता है कि बच्चों को कुछ ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वे अपने जीवन में आगे बढ़ सके। **-डा. सुनीत कुमार**



सम्मान के साथ हमारी जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती है और यह हमें बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है। कक्षा में हमेशा मेडिकल छात्रों को बुनियादी चीजों को समझाने का प्रयास करता हूं ताकि वे अपनी जिम्मेदारी समझ सकें। **- डा पार्थ कुमार चौधरी**



जागरण की ओर से यह सम्मान पाकर बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। ये सम्मान ही हमें अपने क्षेत्र में बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है। सम्मान के लिए जागरण का आभार व्यक्त करता हूं। **- दीपा चौधरी**

यह सम्मान पाकर बहुत खुश हूं। दैनिक जागरण परिवार समाज, संस्कृति और धरोहर को बचाने के लिए इस तरह के कार्यक्रम हमेशा करता रहे। ऐसे आयोजन करता रहे ताकि समाज को और बेहतर बनाया जा सके। **- एमके गुप्ता**

राष्ट्रकवि दिनकर जिस तरह के कवि थे, जागरण परिवार का यह प्रयास उसी दिशा में है। इससे युवा प्रेरित होंगे और साहित्य के क्षेत्र में कुछ रचेंगे। अध्ययन के लिए प्रेरित होंगे। इस आयोजन के लिए दैनिक जागरण का धन्यवाद। **- ज्योत्सना कुमारी**



ऐसे कार्यक्रम समाज को एक नई दिशा देने का कार्य करते है। कार्यक्रम में ऐसे प्रबुद्ध व्यक्तियों को सुनने का अवसर मिला, ये बहुत खुशी की बात है। खासतौर पर युवाओं को अध्ययन के लिए यह आयोजन प्रेरित करेगा। **- अंशु तिवारी**



राष्ट्रकवि दिनकर तो हर कोई नहीं बन सकता लेकिन उनकी रचना से युवाओं में हमेशा एक नई ऊर्जा और उत्साह जागृत होती है। दैनिक जागरण ने यह अवसर दिया कि हम आज उन्हें याद कर रहे है। चर्चा कर रहे है। **- रंजीत कुमार ठाकुर**



जागरण के इस कार्यक्रम में शरीक होकर ये सब सीखने को मिला कि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरी नहीं है बल्कि चरित्र का निर्माण करना है। यहां आकर अन्य भी कई उपयोगी जानकारियां मिली। **- गौतम कुमार**



आधुनिक युग में दो शब्द अंग्रेजी बोलना ही शिक्षा और शिक्षित होना माना जाता है, लेकिन शिक्षा वह नहीं है यह तो आपके संस्कार और व्यवहार से पता चलता है। इस कार्यक्रम में इन बातों पर भी चर्चा हुई है। **- साबिर हुसैन**

## शिक्षकों की राय



राष्ट्रकवि दिनकर की ये बोल ''कलम आज उनकी जय बोल'' कह रहे है, कलम को जिसने देश के लिए प्राणों की आहुति दी, उनकी जय हो, उनकी प्रशंसा में गीत गाओ। कलम की जय जयकार करने को कह रहे है। **- नीता राय**

आज की आधुनिक शिक्षा और हमारी सनातन संस्कृति बिल्कुल विपरीत हो चुकी है। सनातन शिक्षा हमें उदार और प्रकृति संरक्षक बनाता है। आज शिक्षा के सनातन परंपरा से जुड़ाव की सबसे ज्यादा आवश्यकता है। **- फादर फ्लोरेंस**

आज की आधुनिक शिक्षा पद्धति नौकरी तो दे रही है लेकिन वो बच्चो के अंदर संवेदनशीलता को समाप्त कर रही है, तो कहीं न कहीं इसे संजोए रखने के लिए फिर से सनातन धर्म और संस्कृति की ओर बढ़ना ही होगा। **- अशोक कुमार**

शिक्षा जगत में शिक्षकों की भूमिका कभी कम नहीं होगी। हमेशा इनकी वजह से ही आने वाले बच्चे अपना नाम रोशन करते है। तकनीक की अपनी उपयोगिता है लेकिन वह शिक्षक का विकल्प नहीं है। शिक्षकों को साधुवाद। **- डा. रणधीर**

समाज के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण भूमिका है। साक्षरता से ही कोई इंसान अपना भविष्य बना सकता है और अपने परिवार को आगे ले जा सकता है। दैनिक जागरण की ओर से आयोजित कार्यक्रम काफी अच्छा रहा। **- मनरखन महतो**

दैनिक जागरण जिस तरह से शिक्षकों को सम्मानित करने का काम करता है उससे समाज में एक नई क्रांति आती है, शिक्षकों को अपनी जिम्मेवारी का बोध होता है। समाज के प्रति जिम्मेदारी निभाने का बेहतर तरीका है। **- इंद्रजीत सिंह**

दैनिक जागरण की ओर से की गई पहल सराहनीय है। इस तरह के आयोजन से आत्मविश्वास बढ़ता है। शिक्षा की दीप हमेशा जलती रहनी चाहिए, शिक्षा ही ऐसा हथियार है जो सभी वर्गों को जोड़े रखता है। **- फादर एन लकड़ा**

दैनिक जागरण न सिर्फ हम तक सूचनाएं पहुंचाने का काम कर रहा है बल्कि समाज की सभ्यता, संस्कृति और धरोहर को भी संजोगने का महान कार्य कर रहा है। इस आयोजन के लिए दैनिक जागरण परिवार का बहुत आभार। **- नीता पांडेय**

शिक्षक की किसी से तुलना नहीं की जा सकती है। शिक्षक ही ऐसा इंसान है जो नई पीढ़ी गढ़ने का काम करता है। इस कार्यक्रम में आकर काफी अच्छा लगा। काफी उपयोगी जानकारियां भी मिलीं। राष्ट्रकवि पर भी चर्चा हुई। **- जसमीत कौर**

शिक्षा न सिर्फ हमें नौकरी के लिए तैयार करता है बल्कि बौद्धिक विकास के लिए भी बहुत जरूरी है। शिक्षा हमें अंधकार से प्रकाश की ओर लेकर जाता है, शिक्षा के बिना जीवन अंधकारमय है। इस बात को समझना होगा। **- रेखा नायडु**

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण भी होना चाहिए। आज मूल्य आधारित शिक्षा की सबसे ज्यादा जरूरत है। **- दीपशंकर सेनापति**

सच्ची शिक्षा वही है जो दिमाग को ही नहीं, बल्कि दिल को भी खोलने का काम करती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा काफी समृद्ध रही है। **- अजय कुमार मेहता**

शिक्षा से विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोचने की क्षमता विकसित होती है, वहीं यह समस्याओं को बेहतर ढंग से समझने और हल करने में मदद करता है। **- सत्यप्रकाश**

महात्मा गांधी कहते थे शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का संचार नहीं, चरित्र का निर्माण भी होना चाहिए। शिक्षा की झलक चरित्र और व्यवहार में दिखना चाहिए। **- विजय सिंह**

शिक्षा मनुष्य को न सिर्फ आत्मविश्वास से भरता है बल्कि शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य आत्मनिर्भर भी बन सकता है। आज नैतिक शिक्षा की काफी जरूरत है। **- डा. ललन कुमार**

आधुनिक शिक्षा पद्धति नौकरी तो दे रही है लेकिन वो बच्चों के अंदर संवेदनशीलता को समाप्त कर रही है। शिक्षा ऐसी चीज है जो दुनिया बदल सकती है। **- डा. देवाशीष**

गुरुकुल शिक्षा की ओर अब लौटने का वक्त आ गया है। मौजूदा समय में चल रही शिक्षा व्यवस्था कहीं न कहीं आज बढ़ रही हिंसा और दानवता का ही संकेत है। **- चितरंजन सिंह**

शिक्षा से हमारा बौद्धिक विकास होता है। इसका उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए न कि नौकरी के लिए तैयार करना। शिक्षा से ही परिवार शिक्षित होता है। **- डा. आरषी तिवारी**

शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिससे हम दुनिया को बदलने की क्षमता रखते हैं। इसलिए जीवन में शिक्षा बहुत जरूरी है। यह आयोजन काफी सार्थक रहा। **- सिमरन**

दैनिक जागरण का यह कदम सराहनीय है, शिक्षा के क्षेत्र में यह एक प्रशंसा करने योग्य पहल है। इस आयोजन से कई लोगों को नई जानकारियां मिली। **- नितिन निशांत**

व्यक्ति और परिवार का भौतिकवाद का शिकार होना चिंता का विषय है, शिक्षा बिना समाज व्यर्थ है दैनिक जागरण का यह कदम प्रशंसा के योग्य है। **- डा. दीपक कुमार**

अच्छा लग रहा है राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर के जयंती पर दैनिक जागरण का यह पहल सराहनीय है। ऐसे आयोजन हमेशा होने चाहिए **- निमिशा चौधरी**

शिक्षक एक छोटे बच्चे को इस काबिल बनाता है कि वो अपने भविष्य में कुछ कर सके। शिक्षक ही समाज को गढ़ने का काम करता है। **- ममता सिन्हा**

शिक्षक के साथ-साथ अभिभावकों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे बच्चों को बुनियादी शिक्षा दें। उन्हें शिक्षा की वास्तविकता बताएं। **- डा. रवि भूषण पांडेय**

*********

रांची, सोमवार
23 सितंबर, 2024
नगर
मूल्य ₹ 4.00
पृष्ठ 28

# दैनिक जागरण

www.jagran.com
झारखंड, बिहार, प. बंगाल, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर और हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित

मयंक की अगुआई में भारत ए बनी चैंपियन 18
ट्रंप ने कमला के साथ एक और बहस से किया इन्कार 20





# 'कलम आज उनकी जय बोल'

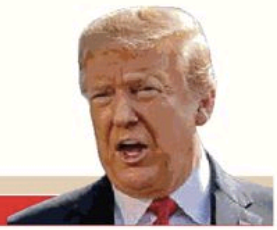

## 'राष्ट्रकवि' रामधारी सिंह दिनकर जयंती पर आयोजित



## शिक्षा समागम-सह-सम्मान समारोह 2024

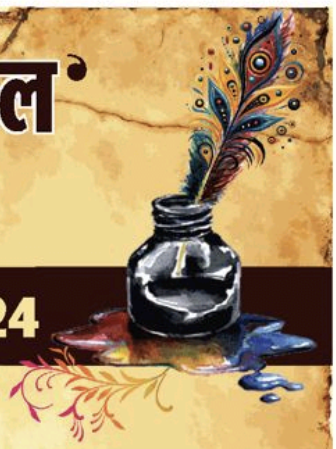

### सत्र :- (1) आधुनिक शिक्षा प्रणाली और सनातन संस्कार।

डा. अजीत कुमार सिन्हा
कुलपति
रांची विश्वविद्यालय, रांची

डा. तपन कुमार शांडिल्य
कुलपति
डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड)

प्रो. (डा.) एस.पी. अग्रवाल
कुलपति
साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची (झारखंड)

प्रो0 (डा.) एम0 के0 सिंह
कुलपति
बाबू दिनेश सिंह विश्वविद्यालय, गढ़वा

प्रोफेसर (डा.) कल्याण कुमार
कुलपति
आरसीयू, बिश्रामपुर, पलामू

मुख्य वक्ता :


मधुसूदन मुकुंद दास
एमटेक आईआईटी कानपुर
महाप्रबंधक इस्कॉन रांची

### सत्र :- (2) नई शिक्षा नीति का प्रभाव।

डा. आर.के. झा
प्राचार्य
डीपीएस स्कूल, रांची

श्री समरजीत जाना
प्राचार्य
जेवी एम श्यामली, रांची


रंजीव कुमार ठाकुर
प्राचार्य
ऑक्सफोर्ड पब्लिक स्कूल, रांची

डा. अशोक कुमार
प्राचार्य
डीएवी आलोक पब्लिक स्कूल, रांची

श्रीमती जसमीत कौर
प्राचार्या
सारदा ग्लोबल स्कूल, रांची

अलखनाथ पांडेय
निदेशक
आर के ग्रुप आफ इंस्टिट्यूशन, गढ़वा

### सत्र :- (3) आधुनिक तकनीक का पारंपरिक शिक्षण प्रणाली पर प्रभाव।

डा. तापस घोष
प्राचार्य
डी ए वी पब्लिक स्कूल, बरियातू, रांची


संजीव कुमार मिश्र
प्राचार्य
एस.आर. डीएवी पब्लिक स्कूल, पुंदाग, रांची

डा. नीता पाण्डेय
प्राचार्या
कैम्ब्रियन पब्लिक स्कूल, कांके रोड, रांची

रेखा नायडू
प्राचार्या
मनन विद्या मनरेसा हाउस विद्यालय, रांची

संजय कुमार मिश्रा
प्राचार्य
डीएवी पब्लिक स्कूल, हेहल, रांची

डा. मुकेश कुमार
प्राचार्य
[illegible]

### सत्र :- (4) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अंकार्जन की दौड़ से प्रभावित होती उत्कृष्टता/ एक्सीलेंस।

डा. (कैप्टन) सुमीत कौर
प्रधानाचार्या
[illegible]


श्रीमती परमजीत कौर
प्रधानाचार्या
सरला बिरला स्कूल, रांची


डा. बिंदेश्वर बेक
सेवन स्टार्स एकेडमी
हेहल रांची

मनोज कुमार
प्राचार्य
आदर्श विद्या मंदिर पब्लिक स्कूल, सिविल कोकर

दीपंकर सेनापति
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय, दीपाटोली

डा. संयुक्ता कुमारी सिंह
प्राचार्या
गोपीनाथ सिंह महिला महाविद्यालय, कल्याणपुर, गढ़वा

### सत्र :- (5) पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधुनिक जीवन शैली का प्रभाव।

पी के ठाकुर
प्राचार्य
लाला लाजपत राय बाल मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रांची

श्रीमती समिता सिन्हा
प्रधानाचार्या
सुरेंद्रनाथ सेंटेनरी स्कूल, रांची

डा. रवि प्रकाश तिवारी
प्रधानाचार्य
डीएवी नंदराज, रांची

अंशु तिवारी
प्रधानाचार्या
विकास पब्लिक स्कूल, पुंदाग, रांची

दीपक कुमार सिन्हा
निदेशक सह प्रधानाचार्य
[illegible] पब्लिक स्कूल
रांची

हाजी नईमुल हक अंसारी
[illegible]

### आइए, मनाएं 'राष्ट्रकवि' दिनकर की जयंती

सम्मानित जन।

संस्कृति के चार अध्याय, रश्मिरथी, उर्वशी जैसी अमर कृति के रचयिता 'राष्ट्रकवि' रामधारी सिंह दिनकर की जयंती 23 सितंबर को है। इस अवसर पर दैनिक जागरण अपने इस महान कवि को अलग रूप में याद करने जा रहा है। इस महान अवसर पर हम शिक्षकों के संग परिसंवाद करेंगे और ऐसे शिक्षक, जिन्होंने शिक्षा की अलख जगाई, अपने छात्रों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले गए, उनके अंदर ज्ञान की भूख जगाई, संस्कृति और संस्कार के मूल तत्व से परिचित कराया, ऐसे शिक्षकों को हम सम्मानित कर खुद भी गौरवान्वित महसूस करेंगे। आप सब जानते हैं, दैनिक जागरण अपनी भाषा और संस्कृति को लेकर पूर्व से ही सजग रहा है। पिछले साल हमने 'हिंदी हैं हम' के अंतर्गत एक दिवसीय संवादी कार्यक्रम का आयोजन रांची में किया था जिसमें प्रसिद्ध साहित्यकार से लेकर भाषाविद्, कहानीकार, आलोचक, इतिहासकार और शहर को जानने वालों ने अपनी बात रखी। दिन भर चले इस कार्यक्रम में शहर के लोगों ने इसका खूब आनंद लिया। इसी तरह दैनिक जागरण पहली बार फिल्म फेस्टिवल को बड़े शहरों से निकालकर छोटे शहरों तक ले गया। रांची में अब हर साल इसका आयोजन हो रहा है। अपनी काव्य प्रतिभा और रचनाओं से हिंदी साहित्य को समृद्ध करने वाले दिनकर का रांची से भी खासा लगाव था। उर्वशी के दर्जनों छंद उन्होंने रांची में ही रचे। इससे हम समझ सकते हैं कि कवि का रांची से किस तरह का लगाव था। पर, हमने उस तरह उन्हें रेखांकित नहीं किया। उनकी कविता में भारत की परंपरा प्रवाहित होती है। इस माह हमलोग दिनकर की 50वीं पुण्य स्मृति वर्ष मना रहे हैं। यही नहीं, भारतीय संस्कृति को देखने की उनकी दृष्टि अलग थी। उन्होंने अपनी डायरी में हिंदू धर्म के संदर्भ में लिखा है, हिंदू धर्म के पास आरंभ से ही एकालाजिकल कांसेस रहा है। हिंदू धर्म के सभी ग्रंथ यह कहते हैं कि आदमी के भीतर जो आत्मा है, वही आत्मा चींटी में भी है, हाथी में भी है, नदी में भी है, पेड़-पौधों और पहाड़ में भी है। इसीलिए भारतीय सभ्यता का विकास प्रकृति के विनाश को रोककर हुआ। यह कैद लगा दी गई कि एक पेड़ काटने वाले को दस पेड़ लगाने चाहिए। यह अहिंसा है, और अहिंसा की भावना सारे भारतीय संस्कार में व्याप्त रही है। यही भारत का मूल है। जिसकी चिंता और बात दिनकर अपनी लेखनी के माध्यम से हमेशा करते रहे हैं। इन्हीं विषयों पर मंथन के लिए दैनिक जागरण शिक्षा समागम-सह-सम्मान समारोह का आयोजन कर रहा है। आयोजित परिचर्चा में कई अनुभवी अध्यापक एवं विद्वतजन अपने विचार व्यक्त करेंगे। किसी सार्थक निष्कर्ष तक पहुंचने और समाज को नई दिशा देने में अपनी-अपनी भूमिका सुनिश्चित करने के लिए आप सभी सुधी जन सादर आमंत्रित हैं।

सादर
जागरण परिवार

**दिनांक :- 23 सितंबर 2024 ❖ संध्या :- 6.30 बजे से ❖ स्थान :- होटल रेडिशन ब्लू, रांची**

मुख्य प्रायोजक :
RCU

प्रायोजक :
BIOME
Leading Institute for Pre-Medical Exam.
A Unit of Bhavya Educational Services LLP

प्रायोजक :
A PIONEER GROUP OF EDUCATION
SAI NATH UNIVERSITY
NIBM
St. Xavier's College
Dr. Camil Bulcke Path, Ranchi
Chotanagpur Law College
Kali Nagar, Namkum, Ranchi-834010
Phone: 0651 220 5877
CAMBRIDGE TRUST OF INDIA
TATISILWAI, RANCHI
डा. पार्थ कुमार चौधरी
प्रोफेसर
शिशु रोग विभाग
रिम्स
डा. सुनील कुमार
प्रोफेसर, एचओडी,
नेत्र विभाग
रिम्स
डा. प्रभात कुमार
सिविल सर्जन
रांची
गोपीनाथ सिंह जन सेवा ट्रस्ट
बिशुनपुर, गढ़वा, मो.-9431136223
COMMERCE COACHING CLASSES
RANCHI'S NO. 1 COMMERCE INSTITUTE
11th, 12th B.COM, B.B.A.
7004285731
KOSHISH TRUST RANCHI
Think A Next Solutions Pvt.Ltd
One Stop Solution
BRIGHT ANGELS PLAY SCHOOL
Harihar Toli, Lower Chutia, Ranchi. Ph.: 7781002847
नियम व शर्तें लागू।
A Dainik Jagran Marketing Initiative

********

दैनिक जागरण